खण्ड-356, अंक-10
शनिवार, 29 फाल्गुन, शक संवत् 1903
(20 मार्च, 1982 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 356 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, उत्तर प्रदेश (भारत)
1982

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 25 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
उपस्थित सदस्य	.. 1313—1316
आचार्य जे० बी० कृपलानी के निधन पर शोकोद्गार	.. 1317—1326

संसद भवन पुस्तकालय

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शनिवार, दिनांक 20 मार्च, 1982

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में 11 बजे दिन में अध्यक्ष, श्री श्रीपति मिश्र की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य—323

अकबर अहमद, श्री (नैनीताल)
अकबर हुसैन, श्री (मुरादाबाद)
अकबाल हुसैन, श्री (गोंडा)
अजहर ईमाम, श्री (मिर्जापुर)
अजीजुर्रहमान, श्री (बिजनौर)
अजीत कुमार सिंह, श्री (कानपुर)
अजीत सिंह सेठी, श्री (मेरठ)
अनवार खां, श्री (अलीगढ़)
अबुल कलाम, श्री (आजमगढ़)
अब्दुल रहमान खां नश्तर, श्री (कानपुर)
अमर नाथ सिंह, श्री (उर्फ अनिल सिंह) (फतेहपुर)
अमर सिंह, श्री (सहारनपुर)
अम्बिका सिंह, श्री (बस्ती)
अम्मार रिजवी, श्री (सीतापुर)
अलमेलु अम्माल, कुमारी (बस्ती)
इन्द्रजीत, श्री (फतेहपुर)
इन्द्र प्रताप सिंह, श्री (लल्लू) (बहराइच)
ईश्वर दयाल त्यागी, श्री (गाजियाबाद)
ईश्वर शरण विद्यार्थी, श्री (इलाहाबाद)
उदयवीर सिंह, श्री (शाहजहांपुर)
उमेश्वर प्रताप सिंह, श्री (गोंडा)
उर्मिला अग्निहोत्री, कुमारी (एटा)
ए० सी० ग्राइस, श्री (नाम निदर्शित आंग्ल भारतीय)
कन्हैया लाल, श्री (मथुरा)
कन्हैया लाल महेन्द्रू, श्री (लखनऊ)
कमला दरियाबादी, श्रीमती (कानपुर)
कमला देवी, श्रीमती (हरदोई)
कमला प्रसाद सिंह, श्री (जौनपुर)
कमला साहनी, श्रीमती (बस्ती)
कल्याण सिंह सोलंकी (बरेली)
कल्लू राम, श्री (मिर्जापुर)
काशीनाथ मिश्र, श्री (बलिया)
किरनपाल सिंह, श्री (बुलन्दशहर)
कुंवर बहादुर मिश्र, श्री (हमीरपुर)
कुंवर सिंह नेगी, श्री (चमोली)
कुदसिया बेगम, श्रीमती (हरदोई)
कुबेर भण्डारी, श्री (देवरिया)
कृष्ण कुमार शुक्ल, श्री (रायबरेली)
कृष्णदत्त, श्री (उर्फ बालराज) (फतेहपुर)
कृष्ण मगन सिंह, श्री (बाराबंकी)
कृष्णवीर सिंह, श्री (बदायूं)
केदार सिंह, श्री (आजमगढ़)
केशरी प्रसाद, श्री (जौनपुर)
केशोराम, श्री (बदायूं)
कैलाश टण्डन, श्री (वाराणसी)
कैलाश प्रसाद, श्री (गोरखपुर)
खरपत, श्री (वाराणसी)
खान गुफरान जाहिदी, श्री (फतेहपुर)
खुदादीन अन्सारी, श्री (देवरिया)
खुर्शीद अहमद अन्सारी, श्री (मुरादाबाद)
खुर्शेद अहमद, श्री (बहराइच)
खुशहाल सिंह रांगड़, श्री (टिहरी-गढ़वाल)
खैरुल बशर, श्री (आजमगढ़)
खवाजा हलीम, श्री (अलीगढ़)
गंगा सागर शंखवार, श्री (कानपुर)
गजेन्द्र सिंह, श्री (इटावा)
गजेन्द्र सिंह, श्री (बाराबंकी)
गया सिंह, श्री (उन्नाव)
गुलाम नबी, श्री (आगरा)
गेंदा देवी, श्रीमती (बस्ती)
गोपाल राम दास, श्री (अल्मोड़ा)
गोपी नाथ दीक्षित, श्री (उन्नाव)
गोपी नाथ वर्मा, श्री (फैजाबाद)
गोरे लाल शाक्य, (इटावा)
गोवर्द्धन तिवारी, श्री (अल्मोड़ा)
गौरी देवी, श्रीमती (गोरखपुर)
गौरी शंकर एडवोकेट, श्री (इटावा)
गौरी शंकर भैय्या, श्री (बलिया)
चन्दन सिंह, श्री (मथुरा)

प्रो0 चन्द्र प्रकाश शर्मा, श्री (बांदा)
चन्द्रबली ब्रह्मचारी, श्री (आजमगढ़)
चन्द्र शेखर त्रिवेदी, श्री (लखनऊ)
चारु चन्द्र ओझा, श्री (पिथौरागढ़)
चेतराम गंगवार, श्री (बरेली)
छत्तर सिंह, श्री (बुलन्दशहर)
छेदी लाल, श्री (गोंडा)
जंग बहादुर, श्री (जौनपुर)
जगदीश नरायन, श्री (फतेहपुर)
जगदीश प्रसाद, श्री (इलाहाबाद)
जगदीश सिंह, श्री (शाहजहांपुर)
जटाशंकर सिंह, श्री (बहराइच)
जनार्दन प्रसाद ओझा, श्री (गोरखपुर)
जमुना प्रसाद, श्री (बाराबंकी)
जयदीप सिंह, श्री (बरेली)
जसवन्त सिंह विष्ट, श्री (अल्मोड़ा)
जितेन्द्रपाल सिंह, श्री (मुरादाबाद)
जियाराम शुक्ल, 'विकल साकेती', श्री (फैजाबाद)
जीराज सिंह मौर्य, श्री (मुरादाबाद)
झिलमिट राम, श्री (गाजीपुर)
तपेश्वर, श्री (आजमगढ़)
तेजनरायन त्रिवेदी, श्री (खीरी)
तेज बहादुर सिंह, श्री (जौनपुर)
तेज बहादुर गंगवार, श्री (पीलीभीत)
त्रिवेनी, श्री (आजमगढ़)
थम्मन सिंह गहलौत, श्री (बिजनौर)
दलगंजन सिंह, श्री (जालौन)
दामोदर शर्मा, श्री (मेरठ)
दीना नाथ, श्री (बस्ती)
दीपक कुमार, श्री (मुजफ्फरनगर)
दीप नरायन वन महन्थ, श्री (गोंडा)
दीपू उर्फ दीप नारायण, श्री (आजमगढ़)
दुर्गा प्रसाद मिश्र, श्री (देवरिया)
दूधनाथ राजभर, श्री (आजमगढ़)
देवी प्रसाद, श्री (बहराइच)
देवेन्द्र पाण्डेय, श्री (सुल्तानपुर)
देवेन्द्र बहादुर सिंह, श्री (कानपुर)
द्वारिका नाथ धवन, श्री (देहरादून)
धनी राम वर्मा, श्री (इटावा)
धनेश्वरी देवी, श्रीमती (वाराणसी)
धर्मवीर सिंह, श्री (मेरठ)
धर्मवीर सिंह त्यागी, श्री (मुजफ्फरनगर)
धर्म सिंह, श्री (बुलन्दशहर)
ध्रुप राय, श्री (देवरिया)
नकली सिंह, श्री (मुजफ्फरनगर)
नत्थू लाल, श्री (हरदोई)
नन्द किशोर सिंह, श्री (देवरिया)
नन्द राम, श्री (बरेली)
नरेन्द्र सिंह, श्री (मेरठ)
नरेन्द्र सिंह भण्डारी, श्री (पौड़ी-गढ़वाल)
नरेन्द्र सिंह विष्ट, श्री (पिथौरागढ़)
नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री (हरदोई)
नाजिर अली, श्री (शाहजहांपुर)
नेत्रपाल सिंह, श्री (एटा)
पंचानन राय, श्री (आजमगढ़)
पन्ने लाल, श्री (गोरखपुर)
परमाई लाल, श्री (हरदोई)
परमात्मा प्रसाद सिंह, श्री (बस्ती)
परागी लाल चौधरी, श्री (सीतापुर)
पहलवान, श्री (जौनपुर)
पारवती देवी, श्रीमती (बाराबंकी)
पुरुषोत्तम, श्री (मिर्जापुर)
पुष्पा चौहान, श्रीमती (अलीगढ़)
पूरन चन्द्र, श्री (अलीगढ़)
प्रताप नारायण द्विवेदी, श्री (हमीरपुर)
प्रदीप कुमार यादव, श्री (बाराबंकी)
प्रभाकर नाथ द्विवेदी, श्री (प्रतापगढ़)
प्रभू नारायण सिंह, श्री (जौनपुर)
प्रमोद कुमार, श्री (प्रतापगढ़)
प्रियदर्शी जेतली, श्री (फैजाबाद)
प्रेमवती, श्रीमती (बदायूं)
प्रेमवती तिवारी, श्रीमती (लखनऊ)
फखरे आलम, श्री (बदायूं)
फिरंगी प्रसाद विशारद, श्री (गोरखपुर)
बंशीधर राज, श्री (खीरी)
बदन सिंह, श्री (आगरा)
बनवारी राम, श्री (वाराणसी)
बब्बन सिंह, श्री (बलिया)
बलवीर सिंह, श्री (फर्रुखाबाद)
बलवीर सिंह, श्री (रामपुर)
बल्देव सिंह आर्य, श्री (उत्तरकाशी)
बाबू राम, श्री (पीलीभीत)
बाबू लाल, श्री (गोंडा)
बाबू लाल, श्री (हमीरपुर)
बाबू सिंह, श्री (अलीगढ़)
बिहारी लाल, श्री (नैनीताल)
बृज किशोर मिश्र, डा0 (देवरिया)
बेनी बाई, श्रीमती (झांसी)
बैजनाथ कुरील, श्री (लखनऊ)

भगवती सिंह विशारद, श्री (उन्नाव)
भगवानदीन कुशवाहा, श्री (कानपुर)
भागीरथ, श्री (झांसी)
भास्कर पाण्डेय श्री (देवरिया)
भूधर नारायण मिश्रा, श्री (कानपुर)
भूप सिंह केन, श्री (गाजियाबाद)
भृगु नाथ चतुर्वेदी, श्री (गोरखपुर)
भोला पाण्डेय, श्री (बलिया)
मथुरा प्रसाद पाण्डेय, श्री (बस्ती)
मन्जूर अहमद, श्री (मेरठ)
मसरूर जाफरी, श्री (उर्फ शबरोज) (गोंडा)
महाबीर सिंह, श्री (सहारनपुर)
महाराज सिंह, श्री (आगरा)
महारानी दोहरे, श्रीमती (इटावा)
महेश चन्द्र, श्री (मेरठ)
महेश प्रसाद, श्री (देवरिया)
माण्डवी प्रसाद सिंह, श्री (वाराणसी)
माता प्रसाद पाण्डेय, श्री (बस्ती)
माधव प्रसाद, श्री (फैजाबाद)
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री (एटा)
मान बहादुर, श्री (गोंडा)
मारकण्डेय चन्द्र, श्री (गोरखपुर)
मीर मजहर अली, श्री (बदायूं)
मुईद अहमद, श्री (सुल्तानपुर)
मुख्तार अनीस, श्री (सीतापुर)
मुरलीधर मुनीम, श्री (गोंडा)
मुहम्मद आजम खां, श्री (रामपुर)
मेंहदी असगर, श्री (मुज्जफरनगर)
मोती लाल देहलवी, श्री (कानपुर)
मोहन लाल, श्री (हमीरपुर)
मोहन सिंह, श्री (देवरिया)
मोहम्मद अबरार अहमद, श्री (बदायूं)
मोहम्मद उमर, डाक्टर (गोंडा)
मोहम्मद नबी, श्री (बस्ती)
मोहम्मद रफी सिद्दीकी, श्री (लखनऊ)
यशपाल सिंह, श्री (बुलन्दशहर)
यशपाल सिंह, श्री (सहारनपुर)
योगेश चन्द्र, श्री (वाराणसी)
रईसउद्दीन वारसी, श्री (मुरादाबाद)
रघुराज प्रसाद उपाध्याय, श्री (गोंडा)
रघुवीर सिंह यादव, श्री (मैनपुरी)
रमाकान्त मिश्रा, श्री (इलाहाबाद)
रमेश चन्द्र, श्री (रायबरेली)
राज किशोर राव, श्री (बहराइच)
राज कुमार राय, श्री (आजमगढ़)
राजपति देवी, श्रीमती (सुल्तानपुर)
राजपाल सिंह, श्री (मुरादाबाद)
राजमंगल पाण्डेय, श्री (देवरिया)
राजेन्द्र अग्निहोत्री, श्री (झांसी)
राजेन्द्र कुमार गुप्त, श्री (सीतापुर)
राजेन्द्र सिंह, श्री (अलीगढ़)
राधेश्याम पटेल, श्री (इलाहाबाद)
राधेश्याम वर्मा, श्री (फर्रुखाबाद)
राम अवध प्रसाद, श्री (बस्ती)
राम आसरे पासवान, श्री (बस्ती)
राम आसरे वर्मा, श्री (हरदोई)
राम औतार दीक्षित, श्री (हरदोई)
राम करन, श्री (वाराणसी)
राम कुंवर सिंह, श्री (आजमगढ़)
राम कुमार भार्गव, श्री (सीतापुर)
राम कृष्ण उपाध्याय, डा० (जौनपुर)
राम कृष्ण माहेश्वरी, श्री (मुरादाबाद)
राम गोविन्द, श्री (बलिया)
राम चन्द्र, श्री (वाराणसी)
राम चरण सिंह, श्री (मिर्जापुर)
राम जनम सिंह, श्री (वाराणसी)
रामजी राम, श्री (फैजाबाद)
राम धनी, श्री (गाजीपुर)
राम प्यारे पाण्डेय श्री (फतेहपुर)
राम प्रसाद, श्री (जालौन)
राम प्रसाद, श्री (मुजफ्फरनगर)
राम भजन लाल, श्री (खीरी)
राम यश सिंह, श्री (सहारनपुर)
राम रतन सिंह, श्री (सीतापुर)
राम लाल, श्री (सीतापुर)
राम लाल वर्मा, श्री (हरदोई)
राम शिरोमणि, श्री (जौनपुर)
राम समुझावन, श्री (जौनपुर)
राम सागर, श्री (बाराबंकी)
राम सिंह, श्री (सहारनपुर)
राम सिंह खन्ना, श्री (बरेली)
रामसिंह रावल, श्री (एटा)
राम सेवक, श्री (सुल्तानपुर)
राम स्वरूप निम, श्री (सहारनपुर)
राम हर्ष राय, श्री (गाजीपुर)
रामेश्वर नाथ चौबे, श्री (बरेली)
रामेश्वर प्रसाद, श्री (बांदा)
रियासत हुसैन, श्री (मुरादाबाद)
रुद्र प्रताप सिंह, श्री (देवरिया)

रूप राम, श्री (शाहजहांपुर)
रूल्हा सिंह, श्री (सहारनपुर)
लटूरी सिंह, श्री (एटा)
लल्लू सिंह चौहान, श्री (मैनपुरी)
लाल प्रताप सिंह, श्री (प्रतापगढ़)
लालसा, श्री (आजमगढ़)
लोकपति, श्री (मिर्जापुर)
लोकमणि शर्मा, श्री (मथुरा)
वासुदेव सिंह, श्री (प्रतापगढ़)
विजय प्रकाश, श्री (इलाहाबाद)
विजय शंकर सिंह, श्री (गाजीपुर)
विजय सिंह, श्री (मिर्जापुर)
बिजय सिंह राना, श्री (आगरा)
विद्या भूषण, श्री (मुजफ्फरनगर)
विद्या सागर नौटियाल, श्री (टिहरी गढ़वाल)
विनोद कुमार तिवारी, डा० (पीलीभीत)
विमल प्रसाद तिवारी, श्री (फर्रुखाबाद)
विमल राकेश, श्रीमती (सहारनपुर)
विशन लाल, श्री (बिजनौर)
विश्राम दास, श्री (इलाहाबाद)
विष्णु दयाल वर्मा, श्री (मैनपुरी)
वीरेन्द्र कुमार चौधरी, श्री (सीतापुर)
वीरेन्द्र प्रताप शाही, श्री (गोरखपुर)
वीरेन्द्र सिंह, श्री (मुजफ्फरनगर)
वीरेन्द्र सिंह ढाना, कुंवर (गाजियाबाद)
वृद्धि नारायन सिंह, श्री (वाराणसी)
शंकर सिंह, श्री (जालौन)
शम्भूनाथ, श्री (आजमगढ़)
शिरोमणि, श्री (बांदा)
शिव दर्शन, श्री (रायबरेली)
शिव नरेश, श्री (बांदा)
शिव बालक, श्री (रायबरेली)
शिवमंगल सिंह, श्री (मैनपुरी)
शिवानन्द नौटियाल, डाक्टर (पौड़ी गढ़वाल)
शेर बहादुर, श्री (फैजाबाद)
श्याम लाल बाजपेयी, श्री (बाराबंकी)
श्याम सिंह, श्री (बिजनौर)
श्याम सूरत उपाध्याय, श्री (इलाहाबाद)
श्रीपति मिश्र, श्री (सुल्तानपुर)
संकठा प्रसाद शास्त्री, श्री (वाराणसी)
सईदुल हसन, श्री (बुलन्दशहर)
सतीश चन्द्र जायसवाल, श्री (इलाहाबाद)
सत्यपाल सिंह, श्री (शाहजहांपुर)
सत्येन्द्र चन्द्र गुड़िया, श्री (नैनीताल)
सन्त बक्स रावत, श्री (लखनऊ)
सरदार सिंह, श्री (मथुरा)
साहब सिंह, श्री (गाजीपुर)
सिकन्दर अली खां, श्री (शाहजहांपुर)
सुखवीर सिंह गहलौत, श्री (गाजियाबाद)
सुग्रीव सिंह, श्री (देवरिया)
सुनीता चौहान, श्रीमती (रायबरेली)
सुन्दर सिंह, श्री (बहराइच)
सुमन लता दीक्षित, कुमारी (कानपुर)
सुरेन्द्र कपिल, श्री (सहारनपुर)
सुरेन्द्र कुमार, श्री (उर्फ मुन्नी) (गाजियाबाद)
सुरेन्द्र प्रताप नारायण, श्री (बस्ती)
सुरेन्द्र सिंह चौहान, श्री (अलीगढ़)
सूबेदार सिंह, श्री (मैनपुरी)
सूरजभान, पंडित (अलीगढ़)
सूर्यनाथ उपाध्याय, श्री (जौनपुर)
स्वरूप कुमारी बख्शी, श्रीमती (लखनऊ)
स्वामी प्रसाद सिंह, श्री (हमीरपुर)
हंसराज सिंह वर्मा, श्री (एटा)
हर गोविन्द वर्मा, श्री (सीतापुर)
हरदेव, श्री (बलिया)
हरबंश प्रसाद पाण्डेय, श्री (बांदा)
हरिद्वार पण्डेय, श्री (गोरखपुर)
हरि प्रसाद, श्री (उन्नाव)
हरिवंश सहाय, श्री (देवरिया)
हरि सिंह, श्री (बुलन्दशहर)
हरी किशन श्रीवास्तव, श्री (कानपुर)
हरी शंकर, श्री (हरदोई)
हाफिज मोहम्मद सिद्दीक, श्री (मुरादाबाद)
हुकम सिंह, श्री (मुजफ्फरनगर)

उत्तर प्रादेश विधान सभा

20 मार्च, 1982

आचार्य जे0 बी0 कृपलानी के निधन पर शोकोद्गार

(11 बजे पूर्वाह्न)

श्री अध्यक्ष--

मैं अत्यन्त भरे हृदय से आपको बताना चाहूंगा कि आचार्य कृपलानी का कल निधन हो गया है । इस सम्बन्ध में अभी उनका यहां निधन का प्रस्ताव होगा और उसके उपरान्त हम बैठ नहीं सकेंगे । आज की जो भी सदन की कार्य-सूची का काम था, यह सभी नेताओं से और सबसे बात होकर तय हुआ है कि सदन की सहमति इस पर होगी, तो यह 22 तारीख को आज का कार्य लिया जायगा ।

(कोई आपत्ति नहीं की गयी)

*सार्वजनिक निर्माण मंत्री (श्री अम्मार रिजवी)--

माननीय अध्यक्ष जी, आज एक बहुत ही दुख और अफसोस के माहौल में हम इस सदन में जमा हुए हैं । कल हमारे बीच से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, जंगे आजादी के सूरमा, जो कड़ी हमें स्वतंत्रता सेनानियों से और उस इतिहास से मिलती थी, उसकी आखिरी कड़ी आचार्य कृपलानी जी का स्वर्गवास कल हो गया लगभग 94 वर्ष की उम्र में । उनका जन्म 1888 में हुआ । उसके बाद उन्होंने शिक्षा प्राप्त की और कालेज में और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर भी रहे । कांग्रेस में और इस आन्दोलन में चम्पारन का जब मूवमेंट शुरू हुआ तो गांधी जी के साथ आये और कदम-कदम पर गांधी जी के साथ रहे चाहे दण्डी मार्च हो या भारत छोड़ो मूवमेंट हो, चाहे जेल की यातनायें हों, हर मौके पर गांधी जी के साथ सिपहसालार की हैसियत से उनके साथ रहे । आचार्य जी के जीवन में बहुत सी चीजें एक साथ मिलती हैं, अर्थशास्त्र के इतने बड़े पण्डित, राजनीतिशास्त्र के इतने बड़े जानकार और एक इतने बड़े स्कालर वे थे । वे सिर्फ किताबों तक ही सीमित नहीं थे बल्कि जहां उनकी लिखी हुई किताबें हमेशा याद रखी जायेंगी वहीं सक्रिय राजनीति में और अंग्रेजी साम्राज्य से जो उन्होंने टक्कर ली है, वह भी याद रखी जायगी ।

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पर रोती है,
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा ।

वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिनकी खुशबू आने वाली नस्लें महसूस करेंगी । आज उनके न रहने के बाद भी जब भारत की प्लानिंग पर नजर डालनी होगी, जब इन्डियन नेशनल कांग्रेस का इतिहास देखना होगा, जब गांधी जी पर जानकारी की जरूरत होगी, तो उनको किताबों से फायदा उठाना पड़ेगा और उनकी खुद की जिन्दगी से फायदा उठाना पड़ेगा । जंगे आजादी में जो उनका योगदान है, उसे इतिहास में सुनहरे हर्फों से लिखा जायगा । उत्तर प्रदेश से उनका खास सम्बन्ध था, उनकी धर्मपत्नी यहां की मुख्य मंत्री भी रह चुकी थीं । इस सदन से, यहां की जनता से और प्रदेश से, वैसे तो उनका घर सारा हिन्दुस्तान था लेकिन उत्तर प्रदेश से उन्हें खास लगाव था और लखनऊ को इसका गौरव हासिल है कि यहां वे काफी दिन आकर रहे थे । आज वे हमारे बीच नहीं रहे, उनके जाने से जो कमी

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया है।

[श्री अम्मार रिजवी—]

महसूस होती है, वह कभी भरी नहीं जा सकती । आचार्य कृपलानी का नाम हमेशा याद रखा जायगा जब कांस्टीट्युएन्ट एसेम्बली की बात होगी, संविधान को जब आने वाले लोग उसे पढ़ेंगे तो कांस्टीट्युएण्ट एसेम्बली की मेम्बर की हैसियत से, लोक सभा के 4 सेशन्स में 4 लोक सभाओं के मेम्बर की हैसियत से, जो उनका योगदान है, भुलाया नहीं जा सकता । इसी तरह से जब भारतवर्ष आजाद हुआ तो उस समय भारत की बागडोर आचार्य कृपलानी जी के हाथ में थी ।

आज स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की वह कड़ी अलग नजर आती है, जिसने भारतवर्ष को आजाद कराया । इतने दुबले–पतले शरीर के होने के बावजूद भी उन्होंने इतने मजबूत अंग्रेजों के साम्राज्य से टक्कर ली । अगर मैं यह कहूं कि शोक सन्तप्त परिवार को श्रद्धांजलि भिजवा दें, तो मेरी समझ में नहीं आता कि उनका शोक सन्तप्त परिवार क्या है, हर व्यक्ति उनका परिवार है, हर व्यक्ति यह महसूस करता है कि हमारा जातीय नुकसान हुआ है । भारत की समस्त जनता महसूस करती है और हम लोग महसूस करते हैं कि यह हमारा अपना नुकसान हुआ है । अपने व्यक्ति के जाने से जो कमी महसूस होती है, वह महसूस कर रहे हैं, लेकिन इस दुनिया से हर एक व्यक्ति को जाना है कुछ ऐसे व्यक्ति ऐसे जाते हैं जिन्हें कि कोई भी याद नहीं करता लेकिन कुछ ऐसे जाते हैं जो इस धरती पर अपने कदमों के निशान छोड़ जाते हैं, वह कदमों के निशान हमेशा रहनुमाई करते हैं । आचार्य जी का नाम उन्हीं लोगों में शामिल है, जिनके न रहने से हम इस कमी को महसूस कर रहे हैं ।

मत साहिल हमें जानों, बड़ी मुश्किल से ऐसा होता है,
एक ख्वाब के परदे से ऐसा इंसान निकलता है ।

मेरा दल और हम सब लोग जैसे भारत की तमाम जनता के लोग दुखी हैं ऐसे ही दुखी हैं । मैं निवेदन करूंगा कि हमारी संवेदना और दुःख भारत के सब लोगों तक पहुंचाने की कृपा करें क्योंकि जैसा मैं कह चुका हूं, उनके परिवार को सीमित नहीं किया जा सकता ।

*श्री राजेन्द्र सिंह—

माननीय अध्यक्ष जी, आचार्य जे0 बी0 कृपलानी के निधन पर डा0 अम्मार रिजवी ने जो संवेदना के मार्मिक भाव व्यक्त किये हैं, मैं और मेरा दल उनसे अपने आपको सम्बद्ध करता है ।

श्रीमन्, यह निर्विवाद सत्य है कि आज हमारे बीच से एक वयोवृद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जो कि स्वतन्त्रता की उस कड़ी को आज के युग से जोड़े हुए थे, वह हमारे बीच से उठ गये । वह एक आजादी के प्रहरी थे, लोकतंत्र उनकी रग–रग में बसा हुआ था । यही नहीं वह अपने जीवन पर्यन्त मानव अधिकारों के लिये लड़ते रहे । ऐसे व्यक्ति के हमारे बीच से उठ जाने से निश्चित तौर से इस देश को आघात पहुंचा और वह कड़ी, वह व्यक्ति, वह महान व्यक्ति, वह महान देश भक्त, जो हमारे बीच से उठते चले जा रहे हैं, निश्चित तौर से उनकी पूर्ति नहीं हो पायेगी । उन्होंने इस देश को आजाद कराने में जो योगदान दिया, उसके बारे में डा0 अम्मार रिजवी साहब ने बहुत कुछ कहा, हम सभी उससे सहमत हैं और जानते हैं कि जब यह देश आजाद हुआ उस समय वह इण्डियन नेशनल कांग्रेस के

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

अध्यक्ष थे। उनकी अध्यक्षता में यह देश आजाद हुआ था। सन् 1917 में चम्पारन में जब आन्दोलन गांधी जी चला रहे थे तो उस समय उन्होंने उसमें सहयोग किया था, उस समय उनके चरणों में वे आये थे और मैं यह निश्चित रूप से कह सकता हूं कि वे आजीवन गांधीवादी रहे। गांधी जी के राजनैतिक विचारों के बारे में, आर्थिक विचारों के बारे में, सामाजिक विचारों के बारे में, हरिजनों के बारे में जो गांधी जी के विचार थे, गांधी जी ने जो कुछ भी लिखा है उसके अलावा भी एक बहुत बड़ा हिस्सा निश्चित रूप से जानने के लिये आचार्य कृपलानी की पुस्तकों को देखना पड़ेगा। उनकी पुस्तकों में बहुत कुछ मिल सकता है।

उस महान सेनानी ने देश को आजाद कराया। सन् 1975 में जब पुनः इस देश पर काली घटा छायी थी, उससे स्वतंत्रता समाप्त हो सकती थी, उस समय उन्होंने प्रोत्साहन दिया था, एक दिशा हम सब को दी थी। उसी समय 1977 में जनता पार्टी के शासन में आने पर रामलीला मैदान में एक बहुत बड़ी अविस्मरणीय ऐतिहासिक सभा हुई थी उस सभा को सम्बोधित करते हुए उन्होंने जो शब्द कहे थे उसे यहां कह देना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं। उन्होंने कहा कि "व्यक्ति पूजा बढ़ती जा रही है।" उन्होंने फिर आगे कहा कि "हम लोग तुच्छ राजनीतिज्ञ हैं, हम लोगों को भी और मनुष्यों की तरह ही समझना चाहिये। हम सब आत्मकेन्द्रित होते हैं, राजनीतिक व्यक्ति को पैर नहीं छुलाने चाहिये। हमारा महत्वपूर्ण कर्त्तव्य है कि हम निरन्तर जागरूक रहें जागरूक रह कर ही हम इस देश की आजादी की रक्षा कर सकते हैं। यदि आप जागरूक नहीं हैं तो हम गुलाम हो जायेंगे। हमें ऊपर मत चढ़ाइये।"

इन्ही शब्दों के साथ उस महान स्वतंत्रा संग्राम सेनानी को जिसने देश में काली घटा छाने पर उसमें अपना योगदान दिया और इस देश को एक दिशा दी, मैं उस महान नेता को जो कि आज हमारे बीच से उठ गया है, अपनी ओर से और अपने दल की ओर से सम्वेदना व्यक्त करता हूं जैसा कि अभी डाक्टर साहब ने कहा कि उनका कोई परिवार नहीं, वह देश के थे और देश उनका था। आज जब देश उस महत्वपूर्ण अपने सपूत के चले जाने से दुखी है, सारा देश उनके जाने के दुख से दुखी है, आप हमारी समवेदनायें भी उस दुख में सम्मिलित करने की कृपा करें।

*श्री हरी किशन श्रीवास्तव—

मान्यवर, इस शोकाकुल वातावरण म, मैं अपने को और अपने दल को अभी जो भावनायें डाक्टर अम्मार रिजवी साहब ने और नेता विरोधी दल ने व्यक्त की हैं, उनसे जोड़ता हूं। आचार्य कृपलानी जिस समय संघर्ष कर रहे थे, उसी समय कांग्रेस के राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं ने उनको अपना एक अगुआ, बड़ा भाई समझ कर उनको दादा कृपलानी कहना शुरू किया था और वह सदा दादा के ही नाम से माने जाते थे। अन्त समय तक जब भी कोई उनके पास गया उसने दादा कह कर ही उन्हें सम्बोधित किया। मान्यवर, कुछ ऐसे क्षण होते हैं जो हर व्यक्ति को याद बनाये रखते हैं।

एक बार जब यहां पर श्रीमती सुचेता कृपलानी जी जब यहां मुख्य मन्त्री थीं जिस मकान में इस समय डाक्टर अम्मार रिजवी साहब रहते हैं, उसी में वे रहती थीं और स्वतंत्र पार्टी ने उनको राज्य सभा के लिये प्रत्याशी बनाया। मैं उस समय अपने प्रदेश में उस पार्टी का जनरल सेक्रेटरी था। उस समय पार्टी में विवाद हुआ तो मैं और श्री बल्देव सिंह जी उनके पास गये और कहा कि दादा

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री हरी किशन श्रीवास्तव--]

एक बात आपसे कहने आये थे, तो उन्होंने कहा कि कहिये । तब मैंने उनसे कहा कि हमारे नेता मुन्नू मसानी जी न हम लोगों से कोई सम्पर्क नहीं किया और आपका नाम घोषित कर दिया । इसलिये आपके नाम पर कहीं कोई विवाद न हो जाये । मैंने कहा कि आप स्वयं सब से बात कर लेते तो या इस इरादे को छोड़ देते । उनको मान्यवर, एक मिनट नहीं लगा, न किसी से पूछना, न कुछ उन्होंने तुरन्त कहा कि क्या कहा तुमने विवाद जाओ छोड़ दिया ।

मान्यवर, केवल हम दो व्यक्तियों के कहने पर । तब मैंने कहा, नहीं--नहीं ऐसी बात नहीं है । लेकिन उन्होंने कहा कि छोड़ दिया, मेरे कारण तुम्हारे दल में कोई बात न हो जाये । इसी तरह से मान्यवर, कानपुर में इंटरनेशनल थाट सेन्टर स्थापित किया और दादा को उसमें ले गये उद्घाटन कराने । उसमें बड़े-बड़े विद्वान, डाक्टर, विचारक, डाक्टर इकनामी सोशियालाजी के उपस्थित थे । दादा जी ने जब उस पर बोलना शुरू किया तो विश्व की जितनी भी समस्यायें थीं और जितने भी तंत्र थे, आर्थिक तंत्र थे, जितनी इकानामिक पालिसी थीं और एक तरह से मान्यवर, समाज को कैसे उठाया जा सकता है, कैसे मानवता से कृत्रिम दुख हटाया जा सकता है, उसमें जो 45 मिनट का भाषण दिया, तो उन विद्वानों का कहना था कि 7 दिन तक अगर हम अध्ययन करते तो भी इस तरह का एक्सटेम्पोर भाषण नहीं दे सकते थे और दादा जी ने हम लोगों से कहा कि हमको बुलाया और आ गये लेकिन इंटरनेशनल थाट क्या है, इस क्षमता के लिए अभी तुम लोग नहीं हो । पहले अपने देश को देखो, देश की समस्याओं को, घर की समस्याओं को देखो फिर इंटरनेशनल में जाना । तो उनकी भावना क्या थी, उनकी क्षमता क्या थी, योग्यता क्या थी, इस बात पर मेरे साथ जो व्यक्तिगत क्षण बीते, उनको मने बताया ।

इसी प्रकार मान्यवर, इस कांग्रेस पार्टी के महामंत्री रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उनका इस पूरे दल के संचालन का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसने इस देश को यह दिन दिखाया और सत्ता परिवर्तन के रूप में वोट के द्वारा जो 77 में क्रान्ति हुई तो राजघाट से जब सब लोग लौटे संसद सदस्य, उनकी भी अध्यक्षता करने का दादा को सौभाग्य प्राप्त हुआ और दादा ने अलग रह कर भी कभी दलबन्दी की बात नहीं की । मुझे वह दिन याद है जब आदरणीय स्वर्गीय नेहरू जी उनके अलग हो जाने पर उनका कितना सम्मान करते थे । अमरोहा के चुनाव म भरी मीटिंग में कहने लगे ये तो साले कांग्रेसी ने हमारी बीबी को भी फोड़ लिया । हर शख्स को वह अपना छोटा भाई, बच्चे के समान समझते थे । आज वह चले गये । उनके जाने के साथ-साथ वह बातें भी लुप्त होती जा रही हैं, जो वह कह गये, जो छोड़ गये । हम लोग भूले जाते हैं कि हमारे कर्त्तव्य क्या हैं । इसलिए मान्यवर, आज हमें और इस देश को चिन्ता है ।

मान्यवर, इन शब्दों के साथ मैं आपसे यह निवेदन करूंगा कि सारे देश की हमारी जो भावनायें हैं, पहुंचायें और जो भावनायें हमारे साथियों ने व्यक्त की हैं उनसे हमें जोड़ दें ।

*श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त--

माननीय अध्यक्ष जी, आज सम्पूर्ण राज्य असीम शोक से सन्तप्त है । अभी मान्यवर, तीन माह पूर्व मुझे उनके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था । मेरी पार्टी की अखिल भारतीय समिति ने भ्रष्टाचार के खिलाफ सत्याग्रह का

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

फैसला किया तो वहीं पर यह विचार आया कि इस अभियान को शुरू करने से पहले किसी महान व्यक्ति से आशीर्वाद ले लिया जाय और तब दादा का नाम तय हुआ और जो लोग उनसे आशीर्वाद लेने गए उनमें से उनके दर्शन करने वाला एक मैं भी था । उनके दर्शन भी हुए, वार्ता भी हुई और बहुत से विषयों पर वार्ता हुई । वह अस्वस्थ भी थे और वार्ता से ऐसा लगा कि कभी-कभी शायद कुछ विस्मरण हो जाता है लेकिन उसके बाद उत्तर प्रदेश के लिए उनको जो पोड़ा थी, वह बात आज भी याद आती है । उत्तर प्रदेश की शान्ति व्यवस्था के प्रति वह बहुत चिन्तित थे । जब से मान्यवर, मैंने आज जिस विवरण को सुना, यदि आज वह जीवित होते और यह सुनते कि हमारे मुख्य मन्त्री जी के अग्रज की किस तरह से हत्या कर दी गयी तो आज उनकी क्या दशा होती ? वह न्याय व्यवस्था की बिगड़ी हुई स्थिति का चरमोत्कर्ष है ।

आचार्य कृपलानी जी ने एक अध्यापक के नाते मुजफ्फरनगर में जीवन प्रारम्भ किया लेकिन वह किसी एक चहारदीवारी में बन्द होने के लिए नहीं थे । 1917 में उन्होंने उसे छोड़ दिया । चम्पारन के सत्याग्रह के साथ महामना मालवीय जी के साथ सम्पर्क में आये । वह उन्हें विश्वविद्यालय में ले गए लेकिन जैसा कि मैंने कहा वह केवल अध्यापक बनने के लिए संसार में नहीं आए थे । 1934 में कांग्रेस, जो उस समय आजादी की लड़ाई का एक मोर्चा था उसके अखिल भारतीय सचिव बन गये और तब से आजादी प्राप्त करने तक बराबर आजादी की लड़ाई लड़ते रहे । उनका हमेशा यही कहना था कि राजनीति में आपस की लड़ाई में ही उठक-पटक में नहीं रहना चाहिए । रचनात्मक कार्य भी करना चाहिए । मेरी पार्टी का भी यह फैसला है । खादी के माध्यम से जो रचनात्मक सेवा का कार्य गांधी जी ने दिया इसके वे संचालक थे और आज जो गांधी आश्रम है वह उन्हीं की देन है । वह बड़े निर्णायक और अपने विचारों के कट्टर थे । उन्होंने अनुभव किया कि हमारे विचार नहीं मिलते ह इसलिए ह कांग्रेस से अलग हो गये और प्रतिपक्ष के एक विरोधी नेता की हैसियत से वह काम करते रहे । मोरार जी देसाई जब प्रधान मन्त्री बने तो उनको काफी योगदान दिया लेकिन जब लड़ाई की बात सुनी तो कड़ी फटकार भी दी । इस तरह से एक निर्भय व्यक्तित्व चला गया । हालांकि वह बूढ़े थे और अस्वस्थ थे लेकिन फिर भी हर समस्या पर उनके द्वारा जो मार्गदर्शन देश को मिला करता था, वह हम सब के लिए बहुत मूल्यवान था । आज वह हमारे बीच में नहीं हैं । इन शब्दों के साथ मैं अपनी और अपनी पार्टी की ओर से उनके श्री चरणों में अपनी शोक सन्तप्त भावनाएं व्यक्त करते हैं और आपसे निवेदन करते हैं कि इन्हें पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री गौरी शंकर एडवोकेट--

मान्यवर, आचार्य कृपालानी के निधन पर जो माननीय रिजवी साहब ने, नेता विरोधी दल ने और दूसरे अन्य नेतागण ने जो अपनी शोक संवेदनाएं व्यक्त की हैं, मैं स्वयं की और अपने दल की उनसे सम्बद्ध करता हूं । वे एक नेता, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी और कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष रहे । वे महात्मा गांधी के कट्टर अनुयायी थे और उनका निधन 94 वर्ष की अवस्था में कल हो गया । वे बहुत दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे और उनकी अन्तिम इच्छा थी कि जहां उनकी सांस टूटे वहीं पर उनका अन्तिम संस्कार कर दिया जाय । इसलिए

[श्री गौरी शंकर एडवोकेट---]

श्रीमन्, साबरमती सत्याग्रह आश्रम के बगल में ही उनका अन्तिम संस्कार किया जा रहा है। जैसा कि डक्टर रिजवी साहब ने कहा, आचार्य कृपालानी का जन्म 1888 में हैदराबाद में हुआ था। 1912 से 17 तक वे बिहार के मुजफ्फरपुर ग्रियर भूमिहार ब्राह्मण कालेज में इतिहास के प्राध्यापक रहे और 1919 से 20 तक बनारस विश्वविद्यालय में राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर रहे। 1922 से 27 तक गुजरात विद्यापीठ के आचार्य पद को भी उन्होंने सुशोभित किया। इसके अतिरिक्त श्रीमन्, विधान सभा के सदस्य तथा प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ लोक सभा के भी सदस्य रहे। चम्पारन आन्दोलन से लेकर देश की आजादी तक वे बराबर महात्मा गांधी जी के साथ जुड़े रहे और उनके नेतृत्व में उन्होंने स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ने के लिए अपने आपको समर्पित किया। उन्होंने देश को एक दिशा दी जो हम उम्र जैसे नौजवानों के लिए प्रेरणादायक रहा है। मैं समझता हूं कि निश्चित रूप से इतिहास के पन्नों में उनकी अमिट छाप हमेशा के लिए रहेगी। ऐसे व्यक्ति देश क्या दुनिया में बहुत कम ही पैदा होते हैं। उनका प्रेरणात्मक व्यक्तित्व हमेशा इतिहास के पन्नों में अंकित रहेगा, जिसको पढ़कर आने वाली जेनरेशन प्रेरणा प्राप्त करते रहेगी। यों तो पूरा देश ही उनका परिवार है और देश के पूरे लोगों के मानस पटल पर उनकी छाप है, लेकिन फिर भी ब्लड रिलेशन से उनके परिवार में कोई व्यक्ति है तो मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से शोक सम्वेदना उन तक पहुंचाने की कृपा करें तथा साथ ही इस देश को आजादी दिलाने वाले व्यक्तित्व के प्रति हमारी श्रद्धांजलि स्वीकार करने की कृपा करें।

*श्री रियासत हुसैन--

श्रीमन्, आज दादा कृपालानी के निधन पर जो माननीय डाक्टर अम्मार रिजवी साहब ने, नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेताओं ने अपने विचार प्रकट किए हैं, उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन्, डाक्टर रिजवी साहब जिस वक्त खड़े हुए अपने विचार प्रकट करने के लिए तो मेरे लिए बहुत सी यादें ताजा कर दीं। इसलिए कि जिस कोठी में डाक्टर साहब रहते हैं उसी कोठी में लेबर मिनिस्टर की हैसियत से श्रीमती सुचेता कृपलानी रहती थीं और उसके बाद जब मुख्य मन्त्री हुईं तब भी वहीं रहती थीं। सन् 1954 में वे प्रजा सोशलिस्ट पार्टी छोड़ कर चले गये थे, यह पोलिटिकल सवाल है कि वे उस पार्टी को छोड़ कर चले गये लेकिन फिर भी वे हमारे नेता थे उस वक्त मैं उस पार्टी का एक छोटा सा कार्यकर्त्ता था और वे एक बहुत बड़े नेता थे। पहली दफा मैं उनसे कोठी पर मिला था। बात यह हुई कि सन् 62 में जब जन्नते मकीम, मजाहिदे मिल्लत, मौलाना हफीजुर्रहमान साहब का इन्तकाल हो गया तो अमरोहा की सीट खाली हुई तो श्रीनारायण दत्त तिवारी जो पी0एस0 पी0 से छुट्टी ले चुके थे, कुछ दिनों के लिए मुझे लेकर दादा कृपालानी के पास गए थे, तभी दादा कृपलानी के साथ मेरी पहली भेंट हुई थी।

श्रीमन्, उस इलेक्शन के दौरान एक महीने तक मेरा उनके साथ चोली दामन का साथ रहा। अमरोहा में रात-दिन मई, जून के महीने में एलेक्शन के सिलसिले में उनको गांव-गांव में जाकर इन्टेंसिव वर्क करना होता था। वह आज भी सारा दृश्य मेरी आंखों के सामने घूमता है। मैंने उनके अन्दर जो सबसे बड़ा गुण पाया, उन दिनों में उनके साथ रह करके जो मैंने उनसे सीखा

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

वह था कि राजनीति में रह कर अपने सेल्फ रेस्पेक्ट, अपने अन्दर सेल्फ-कान-फिडेन्स और उसके साथ-साथ समाज की सेवा, ये तीन चीजें कोई भी आदम राजनीति में रह कर के एक जिम्मेदार आदमी की हैसियत से कैसे चल सकता है, यह मैंने उन्हीं से सीखा । इलेक्शन के बाद भी समय-समय पर जब वह अमरोहा अपने क्षेत्र के दौरे पर जाते थे मैं ही उनके दौरे का संचालन करता था और मुझे अच्छी तरह से याद है कि एक बार ऐसा हुआ कि साहू सीता राम, जो अमरोहा के अन्दर के थे वह उनके होस्ट थे, उन्हीं के यहां जाते थे दादा जी, उनसे कहा कि दादा आज हमारे डिग्री कालेज की यूनियन का उद्घाटन है आप उसका उद्घाटन कर दीजिए। चूंकि यह जो पहले से प्रोग्राम बनाया गया था उसमें शामिल नहीं था, दादा ने कहा नहीं मैं नहीं जाऊंगा, यह प्रोग्राम में शामिल नहीं है । साहू जी ने लगातार एक महीने कैम्पेनिंग की थी, उन्हीं के यहां रहे भी, वह बहुत उदास हुए । उन्होंने कहा सिर्फ पांच मिनट दे दीजिए । रास्ते में मोटर की स्पीड बढ़ा कर हम पांच मिनट निकाल लेंगे, साहू साहब मनाते रहे । मैंने भी कहा कि सड़क पर इनका कालेज पड़ेगा, यूनियन का उद्घाटन है, पांच मिनट दे दीजिए । दादा तैयार हो गये ।

श्रीमन्, मुझे आज भी याद है कि उन्होंने डिग्री कालेज की यूनियन का उद्घाटन पांच मिनट में कर दिया । मैं उनके साथ था । जो वर्ड उन्होंने वहां पर कहे जिन्हें मैं खुद इस्तेमाल करता हूं उन्हीं के अल्फाज को रिपीट कर देता हूं । जो लड़की यूनियन की सेक्रेटरी थी उससे उन्होंने यह पूछा कि बेटी, यह बताओ कि इस देश का महान व्यक्ति कौन हुआ । उन्होंने कहा महात्मा गांधी । दूसरी लड़की से पूछा सब बातें जो आजकल की नई पीढ़ी को आती हैं, जंजीर खींचना, सिनेमा देखना, जेब काटना, खड़े-खड़े पेशाब करना, शराब पीना, आठ-दस सवाल उन्होंने किए और कहा कि क्या महात्मा गांधी ऐसा करते थे । उन्होंने कहा यह सब नहीं करते थे और उन्होंने वहीं क्लोज कर दिया, ठीक है जब महात्मा गांधी यह नहीं करते थे तो मुझे आशा है कि आप भी ऐसा नहीं करेंगे । यही कह कर पांच मिनट में उन्होंने उद्घाटन पूरा किया और हम लोग वहां से चल दिए ।

श्रीमन्, मैं भी महसूस करता हूं कि राजनीति के अन्दर अगर उसूल के साथ राजनीति करने का सबक इस देश को किसी ने सिखाया तो महात्मा गांधी के बाद आचार्य कृपालानी दादा ने सिखाया इसलिए कि जिसकी अध्यक्षता में उस समय यह मुल्क आजाद हुआ हो, इतनी बड़ी संस्था के वह अध्यक्ष थे, उस वक्त, और आजादी के बाद सिर्फ उसूलों के ऊपर आ करके कि इस डिमोक्रेसी के अन्दर बड़ा स्थान संगठन का होगा या शासन का या लेजिश्लेचर पार्टी का होगा, इस वसूल के ऊपर आकर के उन्होंने उस पार्टी की अध्यक्षता छोड़ दी । पी० एस० पी० में रहने के बाद उन्होंने वह पार्टी भी छोड़ी । लेकिन उसूलों के साथ रहे । इस सबको हमने उनसे सीखा है ।

मैं एक बार फिर अपने और अपने दल की तरफ से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । एक दफे वे जब मुरादाबाद गये थे तो कहा था कि जात, पांत क्या है, मैं किसी जात-पात का नहीं हूं, मैं हिन्दुस्तानी हूं, इसके आगे मुझे मालूम नहीं मैं क्या हूं । बहरहाल जो भी उनका निकटतम हो मैं आशा करता हूं उनको आप हमारी सम्वेदना भेजने की कृपा करेंगे ।

श्री विद्यासागर नौटियाल--

मान्यवर, सत्ता पक्ष की ओर से माननीय निर्माण मन्त्री ने, माननीय नेता विरोधी दल ने और अन्य नेतागणों ने जो विचार व्यक्त किए हैं मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। दादा हमारे बीच से चले गए। एक लम्बा आदमी जिसका लम्बा चेहरा था वह हमारे बीच से चला गया। प्रेरणा का एक स्थायी स्रोत चला गया और हंसी का एक स्थायी फौवारा टूटकर फैल गया। श्रीमन्, कल यह माननीय सदन देर से उठा। मैं जब यहां से घर गया तो खबर नहीं सुन पाया था। न मालूम कल मैंने कैसे 11 बजे रात्रि में रेडियो खोला और उस समय यह खबर मुझे सुनने को मिली। तब से मैं बहुत बेचैन हूं। आचार्य कृपलानी, जिस वंश परम्परा की निभाने की बात हमारे समाज में कहा करते हैं, वैसा उनका कोई उत्तराधिकारी नहीं हैं लेकिन स्वाधीन देश के करोड़ो लोग उनके उत्तराधिकारी हैं आज मुझे खुद सहारे की जरूरत पड़ रही है कि इस तरह से शोक सन्तप्त परिवार होकर मैं दूसरे को सहारा नहीं दे सकता।

मान्यवर, आचार्य कृपलानी काशी विश्वविद्यालय में महामना मदन मोहन मालवीय द्वारा लाये गये थे। बार-बार मेरी नजरों के सामने सेन्ट्रल हिन्दू कालेज में राजनीति विज्ञान का वह कमरा घूम जाता है जिसमें वहां के प्रोफेसर बैठा करते थे उस विश्वविद्यालय में प्रोफेसर शेषाद्रि, डाक्टर नाग और आचार्य कृपलानी जैसे विद्वान थे। मान्यवर, आचार्य कृपालानी विश्वविद्यालय में बहुत दिनों तक नहीं रहे। मैं सोच रहा हूं कि काशी को यह हक हासिल नहीं हो पाया कि वह मणिकर्णिका में उतर प्रदेश के निवासियों से दादा के फूल चुनवा सके। शायद साबरमती का मोह बड़ा था जहां उन्होंने अपनी देह का त्याग किया। उनका व्यक्तित्व इतने सारे गुणों से पूरित था, जिसका बखान करना बहुत मुश्किल है। वे एक राजनीतिज्ञ ही नहीं, विद्वान भी थे और एक महान विद्वान थे। एक बार मुझे आचार्य कृपलानी की एक पुस्तक दी गयी और कहा गया कि इसका अनुवाद करो। मैंने बहुत सारे अनुवाद अपनी जिन्दगी में किए। मैंने बहुत कोशिश की कि मैं इस पुस्तक का अनुवाद कर लूं। लेकिन कुछ ही पृष्ठों के बाद मेरी हिम्मत जवाब दे गयी। उसकी भाषा सीजै थी जो कि मेरे बस से बाहर की बात थी। जाहिर है आचार्य कृपालानी सेऐ महान विद्वान के विचारों को हिन्दी भाषा में अनुवाद करने के लिए किसी महान व्यक्तित्व की ही जरूरत पड़ती। और मैं वह नहीं था। लोक सभा के अन्दर आचार्य कृपलानी का दुबला पतला शरीर, गले में एक चादर डाले ऐसा लगता था कि पता नहीं यह कैसे जीते हैं। जब चलते थे तो हर व्यक्ति जो उनके पास पड़ोस से गुजरता था वह श्रद्धा से नत हो जाता था। लोक सभा के अन्दर दल में रहते हुए भी आचार्य जी दल से ऊपर रहे। उनका पूरा दल कई बार सदन त्याग करता था लेकिन वे सदन का त्याग नहीं करते थे और एक दिन उन्होंने स्पीकर से यह बात कही कि मैं सदन का त्याग नहीं करता हूं।

जब इस देश की सबसे बड़ी परीक्षा की घड़ी आई, 1946 में वे कांग्रेस पार्टी के अखिल भारतीय अध्यक्ष बने और उन्होंने बाद में उस पार्टी का संचालन किया। फिर पार्टी छोड़ दी और दूसरी पार्टी, किसान मजदूर प्रजा पार्टी बनाई, उसमें चले गए। उसमें भी वे रहे लेकिन पार्टी में रहकर ये पार्टी के ऊपर रहते थे। वे एक ऐसे महान व्यक्ति थे, जो सदियों तक प्रेरणा देते रहेंगे। इस देश के नौजवानों को प्रेरणा देते रहेंगे। वे सत्ता से मोह मत करो का उपदेश देने वाले

एकमात्र व्यक्ति थे, वह ऐसे व्यक्ति थे, जिनको कभी मोह झुका नहीं सका। सत्ता ने हमेशा दादा के चरण चूमे और दादा हमेशा सत्ता से ऊपर रहे। मान्यवर, राजनीति में मेरे दल के और मेरे जो विचार हैं वे दादा और दादा के दल के विचारों से मेल नहीं खाते थे। लेकिन जब आज दादा हमारे बीच से जा तो ऐसा लगता है घर का वह बूढ़ा जो हमें बार-बार टोका करता था, हर बार अपनी आराम कुर्सी पर बैठे हुए कह देते थे 'बच्चों तुमने यह काम गलत किया।' आज वह महान व्यक्ति हमारे बीच में नहीं है और हममें से हर व्यक्ति अपने को बेसहारा पा रहा है मुझे लगता है आचार्य कृपालानी जैसा व्यक्ति मर नहीं सकता है, आचार्य जी मरे नहीं, पूर्ण हो गये एक जीवन था, जिसने इस देश को आजादी दिलवायी आचार्य कृपालानी ने अमरत्व प्राप्त कर लिया वे पूर्ण हो गये हैं उनका जीवन पूर्ण हो गया और आज से वे हमारे इतिहास के उस भव्य कक्ष में बैठ गये, जहां बैठने वालों की मौत नहीं होती। जहां से कोई लौट कर नहीं जाता। मैं इन शब्दों के साथ आचार्य जी को अपनी और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री अध्यक्ष—

मैं डा0 रिजवी, माननीय नेता, विरोधी दल और अन्य सभी माननीय नेताओं द्वारा अभिव्यक्त विचारों के साथ अपने को सम्बद्ध करता हूं। सादा जीवन उच्च विचार की प्रतिमूर्ति दादा कृपलानी जी थे। कथनी और करनी की समानता उनकी विशेषता थी। निर्भीक स्वतंत्र चिंतन आचार्य जी का वह गुण था, जिसकी कहने में महात्मा जी के समक्ष भी कभी उनको हिचक नहीं हुई, अपनी बात को जिस तरह से समझते थे उसकी अभिव्यक्ति करते थे। वे जनहित के प्रति सदैव पूर्णरूप से समर्पित रहे। मैं आपके समक्ष उनके सम्बन्ध में कोई विवरण दूं इसकी कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि हममें से अधिकांश जो थोड़े से कम आयु के होंगे इनको छोड़ कर बाकी सभी उनसे भलीभांति परिचित हैं, व्यक्तिगत रूप से परिचित न होंगे तो दूसरों से सुने होंगे उनका लिखा पढ़ा पढ़े होंगे। आचार्य जी के भाषण जिन्होंने सुना है वे जानते होंगे कि वे कितनी आसानी से, किस मधुरता से और हास्य में कितनी-बड़ी बातें कह जाते थे। यह वह लोग थे, जिनके पास बैठने के बाद कैसा भी व्यक्ति हो, किस प्रकार का भी व्यक्ति हो उनके सानिध्य में आने पर कम से कम ऐसा एहसास तो होता ही था कि ज्यादा नहीं तो दो, चार, पांच, दस दिन उनके जीवन का अनुकरण किया जाय, बुरी बातों से बचा जाय और अच्छी बातों की ओर झुकाव हो। दादा जी ने शिक्षक के रूप में अपना जीवन प्रारम्भ किया था, मगर साधारण विद्यालय या विश्वविद्यालय उनके लिए बड़ा छोटा क्षेत्र था। वह पूरे देश और देश के परिपेक्ष्य में पूरे विश्व को शिक्षित करके गये। आज अपनी पूरी उम्र प्राप्त करके आचार्य जी दिवंगत हुए। एक साधारण से साधारण व्यक्ति के लिए भी उनकी तरफ से वही आदर, वही भाव व्यक्त होते थे, जो किसी बड़े से बड़े व्यक्ति के लिए वह व्यक्त करते थे।

मैं यह नहीं कह सकता कि मुझको उनके साथ बैठने का अधिक अवसर मिला, लेकिन उनको प्रणाम करने का, उनकी वाणी सुनने का और संसद में एक सांसद की हैसियत से उनको सुनने का मुझे अवश्य अवसर मिला। दादा वृद्ध हो चुके थे, उस वक्त संसद में बैठकर बोलते थे और जब दादा बोलते थे तो शायद ही कभी कोई दिन ऐसा बचता हो कि उनके दो चार वाक्य के बाद हंसी की गूंज न उठती हो। वह कोई ऐसी बात नहीं कह सकते थे कि यदि कोई

[श्री अध्यक्ष--]

सदन के बाहर जाए तो उस वाक्य को लेकर सांसद और दूसरे लोग आपस में चर्चा न करें। जब वह बोलते थे तो कोई न कोई उक्ति या कोई बात वैसी अवश्य निकलती थी। उस गौरवमयी पीढ़ी, उस पीढ़ी की अन्तिम कड़ी, महात्मा गांधी का जो व्यक्तित्व था, उस तक ले जाने वाली अन्तिम कड़ी आज समाप्त हो गयी। आज देश में वास्तविक रूप से एक ऐसा अभाव आया है, जो औपचारिक ढंग से हम कहा करते थे कि इसकी क्षतिपूर्ति नहीं होगी, आज अवश्य एक ऐसा व्यक्तित्व यहां से उठ गया है, जिसकी क्षतिपूर्ति यदि कभी ईश्वर की कृपा हो सकेगी तो हो सकेगी, वरना नहीं हो सकेगी। हम सबको हृदय से दुख है।

मैं आपके दुःख में अपने को समाहित करता हूं। मुझे स्वतः भी अत्यन्त दुख है। मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपकी, सबकी श्रद्धांजलि, सदन की श्रद्धांजलि ठीक ही कहा है डाक्टर रिजवी और नेता विरोधी दल ने, उनके समस्त परिवार को पहुंचाऊंगा। जितना परिवार उनका है, सदन की अभिव्यक्ति में उन तक पहुंचाऊंगा।

कृपया अब हम सब दो मिनट के लिए उनको श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए अपने स्थान पर मौन खड़े हों।

(सभी सदस्य 2 मिनट के लिए अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए।)

श्री अध्यक्ष--

अब हम उठते हैं और 22 तारीख को 11 बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदन 11 बजकर 50 मिनट पर सोमवार, 22 मार्च, 1982 के दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

लखनऊ :
20 मार्च, 1982

सत्य प्रिय सिंह,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

पी0 एस0 यू0 पी--30 वि0 सभा-20-3-1982--पी0 डी0